11075CH11

### एकादशः पाठः

# स मे प्रियः

प्रस्तुत पद्य महर्षि व्यास विरचित श्रीमद्भगवद्गीता के द्वादश अध्याय से संगृहीत हैं। इस अध्याय में भक्तियोग का वर्णन है। इसमें श्रीकृष्ण द्वारा साकार व निराकार–रूप से भगवत्प्राप्ति का सरलतम मार्ग वर्णित है। वस्तुतः प्रस्तुत पद्यों में वर्णित विचार वर्तमान समाज हेतु विशेषतः ज्ञानपिपासु छात्रवर्ग हेतु भी अत्यधिक प्रासङ्गिक व तर्कसंगत हैं। आज हम स्वयं को प्रत्येक कर्म का अधिष्ठाता मानकर अहंकार से ग्रस्त हैं तथा अभ्यास व संयम का त्यागकर शीघ्र ही सबकुछ पाने की लालसा से व्याकुल हैं। यथा पाठ के शीर्षक 'स मे प्रियः' से अवगत होता है कि ईश्वर को वे ही जन प्रिय हैं जो अपने स्वार्थ को त्यागकर परमार्थ–हेतु व समाज के उत्थान हेतु अग्रसर हैं।

**श्रीभगवानुवाच**

**संनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः।**
**ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः॥**

**क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम्।**
**अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते॥**

**ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः।**
**अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते॥**

**तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्।**
**भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्॥**

**मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।**
**निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः॥**

© NCERT not to be republished

**अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम्।**
**अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनञ्जय॥**

**अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव।**
**मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि॥**

**अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः।**
**सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान्॥**

**श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।**
**ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्॥**

**अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।**
**निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी॥**

**संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः।**
**मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः॥**

**यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।**
**हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः॥**

**अनपेक्षः शुचिर्दक्षः उदासीनो गतव्यथः।**
**सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः॥**

**यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति।**
**शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान् यः स मे प्रियः॥**

**समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।**
**शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः॥**

**तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केनचित्।**
**अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः॥**

## शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

**संन्यस्य** – (सम्+√न्यस्+ल्यप्) समर्पित करके।
**ध्यायन्तः** – (√ध्यै+शतृ) ध्यान करते हुए।
**उपासते** – (उप√आस्) समीप बैठते हैं, उपासना करते हैं।



© NCERT not to be republished

| | | |
|---|---|---|
| **आधत्स्व** | – | (आ√दध् (आ.)) लोट् लकार, मध्यमः पुरुषः, एकवचनम्, (मन को) लगाओ, स्थिर करो। |
| **अत ऊर्ध्वम्** | – | (इस देह का) अन्त होने पर |
| **संशयः** | – | सन्देह, शङ्का |
| **इन्द्रियग्रामम्** | – | (इन्द्रियाणां ग्रामम् इति) इन्द्रियों का समूह |
| **समबुद्धय** | – | (समाना बुद्धिः येषां, ते) सब विज़यों (हर्ष–विषाद, राग–द्वेष आदि) |
| **सर्वभूतहिते** | – | (सर्वेषां भूतानां हिते) समस्त प्रणियों की भलाई में |
| **समाधातुम्** | – | (सम्+आ+√धा+तुमुन्)समाहित या स्थापित करने के लिए |
| **आप्तुम्** | – | (√आप्+तुमुन्) प्राप्त करने के लिए |
| **धनञ्जय** | – | अर्जुन (अर्जुन अपनी धनुर्विद्या के बल से राजाओं से धन व भीष्मादि से गोधन लाए थे अतएव उन्हें 'धनञ्जय' नाम से संबोधित किया गया है) |
| **विशिष्यते** | – | श्रेष्ठ है, श्रेयस्कर है। |
| **अद्वेष्टा** | – | द्वेष न करने वाला |
| **सर्वभूतानाम्** | – | समस्त प्राणियों का |
| **निर्ममः** | – | (निर्गतं ममत्वं यस्मात् सः) ममता (यह मेरा है का भाव) से रहित। |
| **समदुःखसुखः** | – | जिसके लिए दुःख व सुख समान हैं। |
| **मत्कर्मपरमः** | – | मेरी प्रसन्नता के कर्म अर्थात् श्रवण, कीर्तन। |
| **सङ्गविवर्जितः** | – | (सङ्गत् विवर्जितः इति) चेतन व अचेतन– सभी विषयों में आसक्ति का त्याग करने वाला, हर्ज़ एवं (विषाद्) से शून्य। |
| **अशक्तः** | – | (न शक्तः इति अश्क्तः) असमर्थ। |
| **यतात्मवान्** | – | (यत+आत्मवान्)। |
| **यत** | – | इन्द्रियों को संयत करने वाला |
| **आत्मवान्** | – | विवेक से युक्त। |
| **अनिकेतः** | – | (अविद्यमान निकेतं यस्य सः) निश्चित निवास स्थान से रहित। |
| **हृष्यति** | – | प्रसन्न होता है। |
| **द्वेष्टि** | – | द्वेष करता है। |
| **उदासीनः** | – | निष्पक्ष, तटस्थ रहने वाला। |
| **गतव्यथः** | – | (गताः (न उत्पन्नाः) व्यथाः यस्य सः) जिसे किसी भी स्थिति में पीड़ा नहीं होती। |



© NCERT not to be republished

| | | |
|---|---|---|
| **सर्वारम्भपरित्यागी** | – | लौकिक व अलौकिक फलवाले सभी कर्मों का त्याग करने वाला |
| **सततम्** | – | निरन्तर |
| **यतात्मा** | – | शरीर व इन्द्रिय आदि के समूह पर संयम करने वाला |
| **मय्यर्पितमनोबुद्धिः** | – | मुझमें अर्थात् शुद्ध ब्रह्म में अपने मन व बुद्धि को अर्पित करने वाला। |
| **समुद्धर्ता** | – | सम्यक् (पूरी तरह से) उद्धार करने वाला, शुद्ध ब्रहम में धारणा कराने वाला। |
| **मृत्युसंसारसागरात्** | – | (मृत्युयुक्तः यः संसारः, सः एव सागरः इति) मृत्यु युक्त (मरणशील) संसार रूपी सागर से |
| **नचिरात्** | – | शीघ्र ही। |
| **पार्थ** | – | हे अर्जुन (सम्बोधन)। |
| **मय्यावेशित** | – | चेतसाम्, मुझमें अर्थात् ब्रह्म में प्रविष्ट (लीन) मन वालों का। |

## सन्धिविच्छेदः

| | | |
|---|---|---|
| **अनन्येनैव** | – | अनन्येन+एव |
| **मय्येव** | – | मयि+एव |
| **संनियम्येन्द्रियग्रामम्** | – | संनियम्य+इन्द्रियग्रामम् |
| **मामिच्छाप्तुम्** | – | माम्+इच्छ (संयोद्रः) इच्छ+आप्तुम् |
| **ज्ञानमभ्यासाऽज्ञानाद्ध्यानम्** | – | ज्ञानम्+अभ्यासात् (संयोग)+ज्ञानात्+ध्यानम् |
| **कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्** | – | कर्मफलत्यागः+त्यागात्+शान्तिः+अनन्तरम् |
| **अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि** | – | अभ्यासे+अपि+असमर्थः+असि |
| **मदर्थम्** | – | मत्+अर्थम् |
| **मानापमानयोः** | – | मान+अपमानयोः |
| **शीतोष्ण** | – | शीत+उष्ण |
| **अथैतदप्यशक्तोऽसि** | – | अथ+एतत्+अपि+अशक्तः+असि |
| **मद्योगम्** | – | मद्+योगम् |
| **स मे** | – | सः+मे |
| **स्थिरमतिर्भक्तिमान्** | – | स्थिरमतिः+भक्तिमान् |
| **शुचिर्दक्षः** | – | शुचिः+दक्षः |
| **सर्वारम्भ** | – | सर्व+आरम्भ |
| **मद्भक्तः** | – | मत्+भक्तः |
| **मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो** | – | मयि+अर्पितमनः+बुद्धि+यः |

© NCERT not to be republished

## अभ्यासः

1. **अधोलिखित-प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतभाषया देयानि-**
   (क) एतानि पद्यानि कः कं प्रति कथयति?
   (ख) वक्ता सर्वाणि कर्माणि कस्मिन् न्यसितुं कथयति?
   (ग) ब्रह्मणि चित्तं स्थिरं कर्तुं किम् आवश्यकम्?
   (घ) कस्मिन् रताः जनाः ब्रह्म प्राप्नुवन्ति?
   (ङ) षाष्ठे पद्ये महर्षिणा के गुणाः वर्णिताः?
   (च) अभ्यासे अपि असमर्थः जनः कथं सिद्धिमवाप्स्यति?
   (छ) नवम-पद्यानुसारं 'मत्कर्मपरत्वे अशक्तः सति' किं कर्तव्यम्?

2. **ईश्वरस्य प्रियत्वं प्राप्तुम् के गुणाः आवश्यकाः सन्ति? विस्तरेण लिखत-**

3. **प्रदत्तानां पद्यांशानाम् भावार्थम् लिखत-**
   (क) समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानावमानयोः।
   (ख) मय्येव मन आधात्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।
   (ग) यो न दृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति।
   शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः।।

4. **पञ्चमं पद्यमाधृत्य लिखत- कस्मात् कः श्रेयः?**
   यथा- अभ्यासात् ज्ञानम्- .................... .................... ....................
   .................... .................... .................... ....................

5. **ईश्वरस्य स्वगुरुजनानां च प्रियः भवितुम् भवन्तः किं करिष्यन्ति?**

6. **रिक्तस्थानानि पूरयत-**
   (क) संनियम्येन्द्रियग्रामं.........................।
   (ख) सन्तुष्टः.........................योगी।
   (ग) अनपेक्षः.........................दक्षः।
   (घ) तेषामहं.........................मृत्युसंसारसागरात्।
   (ङ) शुभाशुभपरित्यागी.........................स मे प्रियः।

7. **निम्नपदेषु सन्धिच्छेदः विधेयः-**
   अनन्येनैव, मय्येव, करुण एव, निरहङ्कारः, बुद्धिर्यः, मानापमानयोः, अभ्योऽप्यसमर्थः, मद्योगम्, अथैतत्, मदर्थम्

**8. अधोलिखित-पदेषु विग्रहं कृत्वा समासनाम लिखत-**

दृढनिश्चयः, अनिकेतः, स्थिरमतिः, अनपेक्षः, गतव्यथः, कर्मफलत्यागः, निरहङ्कारः, सर्वभूतहिते

**9. प्रदत्त पदानां प्रकृति-प्रत्यय-परिचयः देयः-**

संनियम्य, समाधातुम्, आप्तुम्, सन्तुष्टः, विवर्जितः, अशक्तः, कर्तुम्, आश्रितः

**10. पाठात् विलोम-पदानि चित्वा लिखत-**

निन्दा, शत्रुः, मानम्, समर्थः, शीतम्, व्यथितः, सीदति, शक्तः, चञ्चलम्, अपेक्षः

## योग्यताविस्तारः

कतिपयाः अन्ये उपयोगिनः श्लोकाः अपि पठनीयाः-

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन
दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन।
विभाति कायः करुणापराणां
परोपकारेण न तु चन्दनेन।।

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति।।

एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थान् परित्यज्य ये सामान्यस्तु परार्थमुद्यमभृताः स्वार्थाविरोधेन ये।

तेऽमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये।
ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे।।

घृष्टं घृष्टं पुनरपि पुनश्चन्दनं चारुगन्धम् छिन्नं छिन्नं पुनरपि पुनः स्वादु चैवेक्षुदण्डम्।
दग्धं दग्धं पुनरपि पुनः काञ्चनं कान्तवर्णं न प्राणान्ते प्रकृतिविकृतिर्जायते चोत्तमानाम्।।

तमीश्वराणां परमं महेश्वरम्
तं देवतानां परमं च दैवतम्।
पतिं पतीनां परमं परस्तात्
विदाम देवं भुवनेशमीड्यम्।।



© NCERT not to be republished